

४) स्तोत्र (शंकराचार्य कृत)

(श्रीक्षेत्र व्हनगुंठी येथील पूजेतील)

प्रणमामि तत्पादपंकजयुगम् ॥

गुणातील विद्यप्रभा विश्वरूपभ् ॥

मणि कांचन दिव्य सिंहासनस्थे ॥

फणिर्भूषणे श्रीचंद्रलांबा नमस्ते ॥ १ ॥

निराकार साकार नकार गम्यम् ॥

परब्रह्मवस्तु प्रकाश स्वरूपम् ॥

परंज्याति कौमारि कल्याण मूर्ते ॥

पराशक्ति श्रीचंद्रलांबा नमस्ते ॥ २ ॥

अनध्यामध्ये मनः ज्ञान शक्ति ॥

सुनाशिरमुखे मुनिजन स्तोम वंद्ये ॥

मनःकामना सिद्धी कैवल्य दात्रे ॥

घनानंद श्रीचंद्रलांबा नमस्ते ॥ ३ ॥

अपार प्रभा दिव्य लावण्य गात्रे ॥

अपानकं सोमाकं वन्ही त्रिनेत्रे ॥

विपत् कर्म विध्यं शिनिविश्व भ्रत्रे ॥

कृपांबुनिधी श्री चंद्रलांबा नमस्ते ॥ ४ ॥

गदा पांचजन्या भुजे चक्रापाणि ॥

सदा सुप्रसन्नश्रित कल्प वन्ही ॥

चिदानंद तत्त्वाम्बिके दिव्यमूर्ते ॥

त्रिधा शक्ति श्री चंद्रलांबा नमस्ते ॥ ५ ॥

जगजीवनी सृष्टि निर्माणकारी ॥

जगध्यापी गायत्री वेदांत वेद्य ॥
अगम्य प्रताप प्रकाश स्वरूपे ॥
अंधाराज श्री चंद्रलांबा नमस्ते ॥ ६ ॥
महालक्ष्मी कात्यायनी वेद माते ॥
महत्त्वादि भूतोदरी भूत नाथे ॥
महाकालिका दिव्य मांगल्य मुक्ते ॥
महाराज श्री चंद्रलांबा नमस्ते ॥ ७ ॥
दिशामध्यदेवी कुकुर भीमातटाके ॥
प्रसन्ने सदा सन्नती ग्रामईशे ॥
प्रसिद्धादि पीठा पुरी क्षेत्र वासे ॥
प्रसन्नादि श्री चंद्रलांबा नमस्ते ॥ ८ ॥
इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री शंकराचार्य विरचित श्री चंद्रलांबा स्तोत्र संपूर्णम् ॥